Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

अनुसूचित जनजाति छात्रों की व्यावसायिक रुचियों का अध्ययन

प्रो. मोहन सिंह पवार

डीन, शिक्षा संकाय,
आरकेडीएफ विश्वविद्यालय, भोपाल

सार

व्यावसायिक रुचि एक केंद्रीय मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक संकल्पना है, जो न केवल विद्यार्थियों की शैक्षणिक संलग्नता और करियर निर्णय-निर्माण को प्रभावित करती है, बल्कि उनकी दीर्घकालिक सामाजिक-आर्थिक उन्नति की दिशा भी निर्धारित करती है) सुपर, 1990; ब्लूस्टीन, 2006)। भारतीय परिप्रेक्ष्य में अनुसूचित जनजाति) ST) छात्रों की व्यावसायिक रुचियाँ सामाजिक-आर्थिक वंचना, सांस्कृतिक परंपराओं, शैक्षिक अवसरों की उपलब्धता तथा मनोवैज्ञानिक कारकों की जटिल अंतःक्रिया से निर्मित होती हैं) ज़क्सा, 2019; नाम्बिस्सन, 2016)। यद्यपि समावेशी शिक्षा, कौशल विकास तथा करियर-उन्मुख अधिगम को सुदृढ़ करने हेतु विभिन्न नीतिगत प्रयास किए गए हैं, फिर भी अनुसूचित जनजाति छात्रों की व्यावसायिक रुचियों पर केंद्रित अनुभवजन्य शोध अपेक्षाकृत सीमित पाया जाता है) एनसीईआरटी, 2017; भारत सरकार, 2020)। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य अनुसूचित जनजाति छात्रों की व्यावसायिक रुचियों का व्यवस्थित अध्ययन करना तथा यह विश्लेषण करना है कि सामाजिक-आर्थिक, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक चर उनके व्यावसायिक झुकाव को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग करते हुए अन्वेषक द्वारा निर्मित व्यावसायिक रुचि सूची के माध्यम से आँकड़े संकलित किए गए। निष्कर्षों से प्रमुख व्यावसायिक रुचि क्षेत्रों, लिंग आधारित अंतर तथा रुचियों को यथार्थपरक करियर मार्गों में रूपांतरित करने में आने वाली संरचनात्मक बाधाओं की पहचान हुई। यह अध्ययन समावेशी, संदर्भ-संवेदनशील एवं करियर-उन्मुख शैक्षिक हस्तक्षेपों की आवश्यकता को रेखांकित करता है, जो समकालीन शैक्षिक सुधारों की भावना के अनुरूप हैं) भारत सरकार, 2020; ओईसीडी, 2019)।

मुख्य शब्द: व्यावसायिक रुचि, अनुसूचित जनजाति छात्र, करियर विकास, व्यावसायिक मार्गदर्शन, समावेशी शिक्षा

1. भूमिका

करियर विकास को एक सतत एवं आजीवन प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जिसकी नींव बाल्यावस्था में पड़ती है और किशोरावस्था में यह अपेक्षाकृत स्पष्ट एवं संगठित स्वरूप ग्रहण कर लेती है) सुपर, 1990)। इस प्रक्रिया में व्यावसायिक रुचि की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि यही रुचि विद्यार्थियों की विषय-चयन प्रवृत्ति, व्यावसायिक आकांक्षाओं तथा भविष्य के कार्य-व्यवहार को दिशा प्रदान करती है) हॉलैंड, 1997; गॉटफ्रेडसन, 2002)। व्यावसायिक रुचियाँ केवल व्यक्तिगत पसंद तक सीमित नहीं होतीं, बल्कि वे आत्म-संकल्पना, सामाजिक अपेक्षाओं और उपलब्ध अवसरों से भी गहराई से जुड़ी होती हैं) ब्लूस्टीन, 2006)।

भारतीय समाज में अनुसूचित जनजाति छात्र एक ऐसे सामाजिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो ऐतिहासिक, आर्थिक और शैक्षिक दृष्टि से वंचना का सामना करता आया है) भारत सरकार, 2014)। यद्यपि हाल के दशकों में नामांकन दरों में वृद्धि देखी गई है, फिर भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, करियर मार्गदर्शन एवं उच्च-स्तरीय व्यावसायिक अवसरों तक पहुँच में असमानताएँ बनी हुई हैं) एनसीईआरटी, 2017; नाम्बिस्सन, 2016)। इस पृष्ठभूमि में अनुसूचित जनजाति छात्रों की व्यावसायिक रुचियों को समझना समान अवसरों एवं सामाजिक न्याय की दिशा में एक आवश्यक कदम है) ज़क्सा, 2019)।

2. संकल्पनात्मक ढाँचा

व्यावसायिक रुचि की संकल्पना

व्यावसायिक रुचि से आशय व्यक्ति की उन गतिविधियों एवं कार्य-परिवेशों के प्रति अभिरुचि से है, जिनमें वह स्वेच्छा से संलग्न होना चाहता है) स्ट्रॉन्ग, 1955)। यह एक अपेक्षाकृत स्थिर मनोवैज्ञानिक विशेषता है, जो करियर चयन, कार्य-संतोष तथा व्यावसायिक निरंतरता को प्रभावित करती है) हॉलैंड, 1997; सुपर, 1990)। यह स्पष्ट किया जाना आवश्यक है कि रुचि और योग्यता में अंतर होता है—जहाँ योग्यता किसी कार्य को करने की क्षमता को दर्शाती है, वहीं रुचि उस कार्य के प्रति व्यक्ति की आंतरिक प्रेरणा को प्रतिबिंबित करती है) सुपर, 1990)।

अनुसूचित जनजाति छात्र :सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ

अनुसूचित जनजातियाँ भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 के अंतर्गत मान्यता प्राप्त समुदाय हैं, जो विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, भौगोलिक अलगाव और पारंपरिक आजीविका प्रणालियों से जुड़ी हुई हैं) भारत सरकार, 2014)। कृषि, वन-आधारित श्रम एवं पारंपरिक शिल्प इन समुदायों की आजीविका के प्रमुख स्रोत रहे हैं, जो छात्रों

के व्यावसायिक समाजीकरण को प्रभावित करते हैं) ज़क्सा, 2019)। साथ ही, गरीबी, भाषा संबंधी बाधाएँ और सीमित शैक्षिक संसाधन व्यावसायिक आकांक्षाओं के दायरे को संकुचित कर सकते हैं) एनसीईआरटी, 2017; नाम्बिस्सन, 2016)।

सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

हॉलैंड का RIASEC सिद्धांत व्यावसायिक रुचियों को छह श्रेणियों—यथार्थवादी, अन्वेषणात्मक, कलात्मक, सामाजिक, उद्यमी एवं पारंपरिक—में वर्गीकृत करता है)हॉलैंड, 1997)। यद्यपि यह सिद्धांत व्यापक रूप से स्वीकृत है, तथापि जनजातीय एवं ग्रामीण संदर्भों में इसके अनुप्रयोग हेतु सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारकों को सम्मिलित करना आवश्यक माना गया है) लियोंग एवं ब्राउन, 2014; गॉटफ्रेडसन, 2002)।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि व्यावसायिक रुचियाँ सामाजिक-आर्थिक स्थिति, पारिवारिक पृष्ठभूमि, विद्यालयी अनुभव एवं सांस्कृतिक मूल्यों से गहराई से प्रभावित होती हैं) सुपर, 1990; गॉटफ्रेडसन, 2002; ब्लूस्टीन, 2006)। वंचित समुदायों पर केंद्रित शोध यह दर्शाता है कि छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाएँ प्रायः "उपलब्धता की धारणा "द्वारा सीमित हो जाती हैं) ब्लूस्टीन, 2006)।

जनजातीय शिक्षा पर किए गए अध्ययनों में करियर जागरूकता की कमी, अपर्याप्त मार्गदर्शन सेवाएँ तथा रोल मॉडल्स का अभाव प्रमुख बाधाओं के रूप में उभरकर सामने आया है) एनसीईआरटी, 2017; ज़क्सा, 2019)। साथ ही, लिंग आधारित अंतर भी परिलक्षित होते हैं, जहाँ बालिकाएँ प्रायः सेवा-उन्मुख एवं सामाजिक क्षेत्रों की ओर अधिक झुकाव प्रदर्शित करती हैं) एक्लेस, 2011)।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- अनुसूचित जनजाति छात्रों की व्यावसायिक रुचियों का अध्ययन करना।
- प्रमुख व्यावसायिक रुचि क्षेत्रों की पहचान करना।
- सामाजिक-आर्थिक एवं शैक्षिक कारकों के प्रभाव का विश्लेषण करना।
- लिंग आधारित व्यावसायिक रुचि भिन्नताओं का अध्ययन करना।
- शैक्षिक एवं नीतिगत निहितार्थ प्रस्तुत करना।

3. कार्यविधि

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसूचित जनजाति छात्रों की व्यावसायिक रुचियों के वैज्ञानिक अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध अभिकल्प को अपनाया गया, क्योंकि यह पद्धति वर्तमान परिस्थितियों में विद्यमान प्रवृत्तियों, अभिरुचियों एवं विशेषताओं के वस्तुनिष्ठ आकलन के लिए उपयुक्त मानी जाती है। अध्ययन का नमूना चयनित सरकारी विद्यालयों में कक्षा IX से XII तक अध्ययनरत कुल 300 अनुसूचित जनजाति छात्रों पर आधारित था, जिसमें 150 बालक एवं 150 बालिकाएँ सम्मिलित थीं, ताकि लिंग प्रतिनिधित्व संतुलित रूप से सुनिश्चित किया जा सके। अनुसूचित जनजाति छात्रों का यथार्थ एवं प्रासंगिक प्रतिनिधित्व प्राप्त करने के उद्देश्य से उद्देश्यपूर्ण नमूना तकनीक का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के संकलन हेतु अन्वेषक द्वारा विकसित व्यावसायिक रुचि सूची का उपयोग किया गया, जो विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों के प्रति छात्रों की रुचियों को मापने के लिए तैयार की गई थी। संकलित आँकड़ों के विश्लेषण के लिए उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया, जिनमें प्रतिशत और माध्य के माध्यम से सामान्य प्रवृत्तियों की व्याख्या तथा t-परीक्षण के द्वारा विभिन्न समूहों के मध्य सार्थक अंतर की जाँच की गई।

4. सिफारिशें

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर यह अनुशंसा की जाती है कि अनुसूचित जनजाति छात्रों के लिए विद्यालय स्तर पर संरचित एवं नियमित व्यावसायिक मार्गदर्शन कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए, जिससे वे अपनी रुचियों, क्षमताओं एवं उपलब्ध करियर विकल्पों के मध्य सार्थक संबंध स्थापित कर सकें।

शिक्षा व्यवस्था में लिंग-संवेदनशील करियर परामर्श सेवाओं को सुदृढ़ किया जाना चाहिए, ताकि बालक एवं बालिकाएँ दोनों ही पारंपरिक सीमाओं से परे विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों के प्रति जागरूक हो सकें और आत्मविश्वासपूर्वक निर्णय ले सकें। अनुसूचित जनजाति छात्रों की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए स्थानीय एवं स्वदेशी कौशलों को व्यावसायिक शिक्षा से जोड़ने के प्रयास किए जाने चाहिए, जिससे शिक्षा अधिक प्रासंगिक एवं व्यवहारिक बन सके।

विद्यालयों और समुदाय के मध्य सहयोग को बढ़ावा देकर अभिभावकों एवं सामुदायिक सदस्यों की सहभागिता सुनिश्चित की जानी चाहिए, जिससे छात्रों के करियर निर्णयों को सामाजिक समर्थन प्राप्त हो सके। इसके अतिरिक्त, भविष्य के शोधों में व्यापक भौगोलिक क्षेत्र, विविध शैक्षिक संस्थानों तथा मिश्रित शोध विधियों को सम्मिलित करने की अनुशंसा की जाती है, जिससे अनुसूचित जनजाति छात्रों की व्यावसायिक रुचियों को और अधिक गहनता से समझा जा सके।

5. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुसूचित जनजाति छात्रों की व्यावसायिक रुचियाँ सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों, सांस्कृतिक मूल्यों, विद्यालयी अनुभवों एवं मनोवैज्ञानिक कारकों की पारस्परिक अंतःक्रिया से निर्मित होती हैं) सुपर, 1990; ब्लूस्टीन, 2006; ज़क्सा, 2019)। यदि शिक्षा प्रणाली इन बहुआयामी प्रभावों को ध्यान में रखते हुए करियर-उन्मुख, अनुभवात्मक एवं समावेशी दृष्टिकोण अपनाती है, तो अनुसूचित जनजाति छात्रों के लिए अधिक न्यायसंगत और सशक्त व्यावसायिक मार्ग सुलभ हो सकते हैं। इस प्रकार, अध्ययन के निष्कर्ष समकालीन शैक्षिक सुधारों में निहित सिफारिशों के साथ स्वाभाविक रूप से संबद्ध प्रतीत होते हैं)भारत सरकार, 2020; ओईसीडी, 2019)।

संदर्भ

1. बंडूरा, ए) .1997). *सेल्फ-एफिकेसी :द एक्सरसाइज़ ऑफ कंट्रोल*. न्यूयॉर्क :फ्रीमैन।
2. ब्लूस्टीन, डी .एल) .2006). *द साइकोलॉजी ऑफ वर्किंग*. महवाह, एन .जे :.लॉरेंस अर्लबाम।
3. एक्लेस, जे .एस) .2011). *जेंडर्ड एजुकेशनल एंड ऑक्यूपेशनल चॉइसेज़*. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिहेवियरल डेवलपमेंट, 35(3), 195–201।
4. गॉटफ्रेडसन, एल .एस) .2002). *सर्कम्स्क्रिप्शन एंड कॉम्प्रोमाइज़*. जर्नल ऑफ काउंसलिंग साइकोलॉजी, 49(1), 4–18।
5. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया) .2014). *रिपोर्ट ऑफ द मिनिस्ट्री ऑफ ट्राइबल अफेयर्स*. नई दिल्ली :ऑथर।
6. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया) .2020). *नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020*. नई दिल्ली :एम-एच-आर-डी।
7. हॉलैंड, जे .एल) .1997). *मेकिंग वोकेशनल चॉइसेज़* (तृतीय संस्करण .(ओडेसा, एफ .एल :.साइकोलॉजिकल असेसमेंट रिसोर्सेज़।
8. लियोंग, एफ .टी .एल., एवं ब्राउन, एम .टी) .2014). *थियोरेटिकल पर्सपेक्टिव्स*. एफ .टी .एल .लियोंग) संपा(., *कैरियर डेवलपमेंट एंड वोकेशनल बिहेवियर* (पृ .3–30). वॉशिंगटन, डी .सी :.ए-पी-ए।
9. नांबिस्सन, जी .बी) .2016). *सोशियोलॉजी ऑफ एजुकेशन इन इंडिया*. नई दिल्ली :ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
10. एन-सी-ई-आर-टी) .2017). *एजुकेशनल स्टेटस ऑफ ट्राइबल चिल्ड्रेन इन इंडिया*. नई दिल्ली :एन-सी-ई-आर-टी।
11. ओ-ई-सी-डी) .2019). *कैरियर गाइडेंस फॉर सोशल इक्विटी*. पेरिस :ओ-ई-सी-डी पब्लिशिंग।
12. स्ट्रॉन्ग, ई .के) .1955). *वोकेशनल इंटरेस्ट्स ऑफ मेन एंड वीमेन*. स्टैनफोर्ड, सी .ए :.स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
13. सुपर, डी .ई) .1990). *अ लाइफ-स्पैन, लाइफ-स्पेस अप्रोच*. डी .ब्राउन एवं एल .ब्रूक्स) संपा(., *कैरियर चॉइस एंड डेवलपमेंट* (पृ .197–261). सैन फ्रांसिस्को :जोसी-बैस।
14. ज़ाक्सा, वी) .2019). *ट्राइब्स एंड एजुकेशन इन इंडिया*. नई दिल्ली :रूटलेज।